एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 11 (नवम्बर, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

रंग-बिरंगी मछली पालन: कम लागत में स्वरोजगार और समृद्धि का नया द्वार

*आस्था दीक्षित[1], राज कुमार[2], सहर मसूद[1] एवं अखिल गुप्ता[1]
[1]शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू, चठा-180009, भारत
[2]कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), रामबन, स्कॉस्ट-जम्मू (SKUAST-Jammu), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: aasthadixit27@gmail.com

सजावटी अथवा रंग-बिरंगी मछली पालन (Ornamental Fish Farming) जलीय कृषि (Aquaculture) का एक तेजी से उभरता हुआ अत्यंत आकर्षक और लाभदायक क्षेत्र है। इन्हें प्रायः **"जीवित गहने" (Living Jewels)** कहा जाता है। पारंपरिक मत्स्य पालन जहाँ मछलियों का उत्पादन केवल भोजन और प्रोटीन के लिए किया जाता है; के विपरीत सजावटी मछली पालन का मुख्य उद्देश्य एक्वेरियम, कृत्रिम जलाशयों और सार्वजनिक पार्कों के सौंदर्यीकरण के लिए आकर्षक, बहुरंगी और शांत स्वभाव की प्रजातियों का संवर्धन व प्रजनन कराना है। आजकल मानसिक तनाव दूर करने (एक्वेरियम थेरेपी), आंतरिक सज्जा (Interior Decoration) और वास्तु मान्यताओं के चलते घरों और दफ्तरों में एक्वेरियम रखने का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। यह व्यवसाय महिलाओं, युवाओं और छोटे किसानों के लिए एक उत्कृष्ट लघु उद्योग का रूप ले चुका है, क्योंकि इसे कम जमीन, न्यूनतम पानी और सीमित प्रारंभिक पूंजी के साथ घरेलू स्तर (Backyard unit) पर भी आसानी से शुरू किया जा सकता है।

भारत में सजावटी मत्स्य पालन: वर्तमान परिदृश्य

भारत में विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों और समृद्ध जैव विविधता के कारण सजावटी मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं हैं।

- **बाजार और विकास दर:** समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (MPEDA) और वाणिज्यिक विश्लेषणों के अनुसार, भारत में सजावटी मछलियों का घरेलू बाजार लगभग 10 प्रतिशत से अधिक की वार्षिक चक्रवृद्धि दर (CAGR) से बढ़ रहा है। वर्ष 2023-24 में भारत ने 244 मीट्रिक टन से अधिक सजावटी मछलियों का अंतरराष्ट्रीय निर्यात किया, जिसका मूल्य लगभग ₹28 करोड़ दर्ज किया गया।
- **नीतिगत प्रोत्साहन:** भारत सरकार की प्रमुख योजना **प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY)** के अंतर्गत सजावटी मछली पालन को एक स्वतंत्र प्राथमिकता क्षेत्र के रूप में स्थापित किया गया है। इसके तहत बैकयार्ड ब्रीडिंग यूनिट्स, मध्यम स्तरीय ब्रीडिंग यूनिट्स और एक्वेरियम कियोस्क स्थापित करने के लिए सामान्य वर्ग को 40 प्रतिशत तथा महिला व एससी/एसटी वर्ग को 60प्रतिशत तक की वित्तीय सहायता (सब्सिडी) प्रदान की जा रही है।
- **पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत की प्रधानता:** वर्तमान में भारत का 80 प्रतिशत से अधिक सजावटी मछली निर्यात पूर्वोत्तर राज्यों (प्राकृतिक जलस्रोतों से पकड़ी गई स्वदेशी प्रजातियां) और पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु (कैप्टिव ब्रीडिंग) से संचालित होता है। उत्तर भारत के राज्यों में भी संगठित संवर्धन इकाइयों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

जम्मू जिले में सजावटी मछली पालन की स्थिति और अवसर

जम्मू जिला, जो जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश का मुख्य मैदानी और व्यापारिक केंद्र है, सजावटी मछली पालन के लिए रणनीतिक रूप से अत्यधिक अनुकूल है।

- **जलवायु अनुकूलता:** कश्मीर घाटी या जम्मू संभाग के ऊपरी पहाड़ी क्षेत्रों की शीत-जल (Coldwater) जलवायु के विपरीत, जम्मू जिले (आर.एस. पुरा, बिश्नाह, मढ़, अखनूर और जम्मू शहर) की जलवायु **उपोष्णकटिबंधीय (Subtropical)** है। यहाँ का तापमान ग्रीष्मकाल में 35-42°C और शीतकाल में 6-12°C तक रहता है। यह जलवायु गर्म-पानी (Warmwater) की मीठे पानी वाली सजावटी प्रजातियों के संवर्धन के लिए उत्तम वातावरण तैयार करती है।
- **संस्थागत समर्थन (J&K Fisheries Department व PMMSY):** मत्स्य विभाग, जम्मू-कश्मीर द्वारा PMMSY के अंतर्गत स्वीकृत ₹154.57 करोड़ के प्रोजेक्ट्स के तहत जम्मू संभाग में युवाओं को रोजगारोन्मुखी योजनाओं से जोड़ा जा रहा है। जिले में एक्वेरियम निर्माण, बैकयार्ड ऑर्नामेंटल रियरिंग यूनिट्स और रिटेल फिश कियोस्क के लिए ₹1 लाख से ₹10 लाख तक के विभिन्न प्रोजेक्ट्स पर अनुदान का प्रावधान लागू है।

- **स्थानीय बाजार की मांग:** जम्मू शहर, कटरा (वैष्णो देवी कॉरिडोर) और आसपास के उपनगरीय क्षेत्रों में घरों, होटलों और व्यापारिक परिसरों में एक्वेरियम की भारी मांग है। वर्तमान में जम्मू के अधिकांश एक्वेरियम रिटेलर्स कोलकाता और दिल्ली से मछलियां मंगाते हैं, जिससे परिवहन लागत और मृत्यु दर (Mortality rate) अधिक रहती है। स्थानीय स्तर पर फार्मिंग यूनिट्स स्थापित करके किसान इस अंतर को पूरा कर सकते हैं।
- **प्राकृतिक विविधता:** तवी नदी, चिनाब बेसिन और स्थानीय नहरों के नेटवर्क में कई देसी सजावटी प्रजातियां (जैसे *Puntius* और *Danio* वर्ग) प्राकृतिक रूप से पाई जाती हैं, जिनका वैज्ञानिक संग्रहण और कैप्टिव प्रजनन एक नया निर्यात बाजार खोल सकता है।

जम्मू जिले में संवर्धन योग्य प्रमुख सजावटी मछलियाँ

जम्मू के तापमान चक्र (गर्म ग्रीष्मकाल और मध्यम-तीव्र शीतकाल) को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित प्रजातियाँ यहाँ के लिए सबसे उपयुक्त पाई गई हैं:

1. गोल्डफिश (*Carassius auratus*)

- **सहनशीलता:** यह व्यापक तापमान (10°C से 30°C) सहन करने में सक्षम है, जिसके कारण यह जम्मू की कड़ाके की सर्दियों में भी बिना किसी अतिरिक्त हीटर के जीवित रह सकती है।
- **शारीरिक विशेषताएं:** चमकीले नारंगी, लाल, सफेद और मिश्रित रंगों में पाई जाती है। इसकी प्रमुख किस्में- कॉमेट (Comet), फैंटेल (Fantail), और ब्लैक मूर (Black Moor), बजार में सबसे लोकप्रिय हैं।
- **प्रजनन प्रकृति:** यह एक अंडा देने वाली (Egg-scatterer) प्रजाति है, जो वसंत ऋतु (फरवरी-अप्रैल) में जलीय पौधों पर अंडे देती है।
- **आहार स्वभाव:** सर्वभक्षी (Omnivorous); यह पेलेटेड फीड, डैफनिया, और उबली हुई हरी सब्जियों को आसानी से ग्रहण कर लेती है।

2. गप्पी (*Poecilia reticulata*)

- **लाइव-बियरर (शिशु प्रजक):** यह सीधे जीवित बच्चों को जन्म देती है, जिससे शुरुआती पालकों के लिए इसका प्रजनन कराना बेहद सरल और जोखिम-मुक्त होता है।
- **तीव्र प्रजनन चक्र:** प्रत्येक 28 से 30 दिनों में मादा 20 से 60 बच्चों को जन्म देती है, जिससे व्यावसायिक स्टॉक तेजी से बढ़ता है।
- **आकर्षक विविधता:** नर गप्पी का पिछला पंख (Caudal fin) पंखे के समान बड़ा और इंद्रधनुषी रंगों से युक्त होता है।
- **तापमान प्रबंधन:** यह 22°C से 28°C तापमान में तेजी से बढ़ती है। जम्मू में दिसंबर और जनवरी के दौरान इसके टैंक में साधारण सबमर्सिबल हीटर की आवश्यकता होती है।

3. मौली (*Poecilia sphenops*)

- **मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता:** यह अत्यंत कठोर और सहनशील मछली है, जो पानी की गुणवत्ता में मामूली उतार-चढ़ाव को भी सहन कर लेती है।
- **विविध किस्में:** ब्लैक मौली, डालमेटियन मौली, मार्बल मौली और गुब्बारा (Balloon) मौली जैसी किस्मों की बाजार में निरंतर मांग रहती है।
- **अल्गी नियंत्रक:** यह सर्वभक्षी होने के साथ-साथ टैंक की सतह पर जमी काई (Algae) को प्राकृतिक रूप से खाकर पानी को स्वच्छ रखने में मदद करती है।
- **प्रजनन दर:** यह भी एक लाइव-बियरर प्रजाति है, जो एक बार में 40 से 100 तक बच्चे पैदा करती है।

4. ज़ेबरा डैनियो (*Danio rerio*)

- **स्थानीय अनुकूलता:** यह प्रजाति जम्मू के प्राकृतिक जलस्रोतों के समीपवर्ती भौगोलिक क्षेत्रों में भी पाई जाती है, जिससे यह स्थानीय पानी और वातावरण में तेजी से अनुकूलित हो जाती है।
- **शारीरिक बनावट:** इसके चांदी जैसे नीले शरीर पर सिर से पूंछ तक 5 चमकदार क्षैतिज धारियां (Horizontal stripes) होती हैं।
- **सक्रिय झुंड स्वभाव:** यह अत्यंत फुर्तीली और हमेशा झुंड (Schooling fish) में तैरने वाली मछली है, जिसे एक्वेरियम में देखना अत्यंत मनमोहक लगता है।
- **कम तापमान सहनशीलता:** यह 18°C से 24°C पर सबसे बेहतर प्रदर्शन करती है और 12°C तक के ठंडे पानी को बिना तनाव के सहन कर सकती है।

5. रोज़ी बार्ब (*Pethia conchonius*)

- **क्षेत्रीय देसी प्रजाति (Native/Indigenous):** यह जम्मू की स्थानीय तवी और सतवारी-आर.एस. पुरा की धाराओं में प्राकृतिक रूप से मिलती है, जिससे इसका संवर्धन न्यूनतम लागत में संभव है।
- **आकर्षक रंग रूप:** प्रजनन काल के दौरान नर मछली का पेट और पार्श्व भाग गहरा गुलाबी-लाल (Rosy red) हो जाता है, जो इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाता है।
- **शांत और सामाजिक:** यह कम्युनिटी एक्वेरियम के लिए आदर्श मानी जाती है और अन्य शांत मछलियों के साथ बिना किसी आक्रामकता के रहती है।
- **आसान भोजन व्यवस्था:** यह व्यावसायिक आर्टिफिशियल फ्लेक फीड और प्राकृतिक जूप्लैंकटन (जैसे साइक्लोप्स और ट्यूबिफेक्स) दोनों पर उत्तम वृद्धि दर्शाती है।

व्यावसायिक लाभ एवं आर्थिक संभावनाएं

पैरामीटर	पारंपरिक कार्प पालन	रंग-बिरंगी (सजावटी) मछली पालन
आवश्यक भूमि	कम से कम 0.5 से 1 हेक्टेयर तालाब	500 से 1,000 वर्ग फुट (घर का आंगन/छत)
जल आवश्यकता	अत्यधिक (निरंतर जल प्रवाह/गहराई)	सीमित (ग्लास टैंक/सीमेंटेड हौद)
उत्पादन मूल्य	वजन के आधार पर (₹150 - ₹250 प्रति किग्रा)	प्रति नग/पीस के आधार पर (₹10 से ₹500 प्रति जोड़ा)
लाभ चक्र	वार्षिक (8 से 12 महीने में एक बार)	मासिक/द्वैमासिक (लगातार आमदनी)
श्रम प्रबंधन	भारी शारीरिक श्रम	सूक्ष्म देखरेख (महिलाओं व बुजुर्गों के लिए सुगम)

निष्कर्ष

रंग-बिरंगी मछली पालन न केवल एक सौंदर्यपरक शौक है, बल्कि यह जम्मू जिले जैसे उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में ग्रामीण एवं शहरी युवाओं के लिए कम पूंजी में उच्च मुनाफा देने वाला एक आधुनिक कृषि-व्यवसाय है। यदि स्थानीय मत्स्य पालक वैज्ञानिक तकनीकों, गुणवत्तापूर्ण आहार और शीतकाल में न्यूनतम तापमान प्रबंधन को अपनाएं, तो वे न केवल जम्मू के स्थानीय बाजार की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, बल्कि बाहरी राज्यों को भी उच्च गुणवत्ता वाली सजावटी मछलियों की आपूर्ति करके अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं।